HISTORY

B.A.(Hon's) PART-II

Paper-III (Mediaeval Indian History)

Unit-II (Achievement of Iltutmish)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 10

Achievement of Iltutmish

Ans: इल्तुतमिश (1211-1236)ई. - कुतुबुद्दीन ऐबक के देहांत के बाद उसका पुत्र आरामशाह दिल्ली की गद्दी पर बैठा| आरामशाह एक अयोग्य शासक था| वह दिल्ली की बिगड़ती परिस्थिति को संभाल न सका इसलिए अमीरों ने इल्तुतमिश को दिल्ली का सुल्तान निर्वाचित कर लिया|

इल्तुतमिश की प्रारंभिक कठिनाइयां :- गुलाम वंश के सुल्तानों में इल्तुतमिश सबसे महान था| वह एक दास था जो अपनी योग्यता के बल पर दिल्ली का सुल्तान बना| वह तुर्किस्तान का इलबरी जाति का था| उसका जन्म एक उच्च परिवार में हुआ था। वह बचपन में बहुत सुंदर था| बाल्यकाल से ही उसमें बुद्धिमता और साधुता के लक्षण दिखाई पड़ती थी। ईर्ष्यावश उसके भाइयों ने उसको बुखारा के एक व्यापारी के हाथों बेच दिया। उससे एक व्यक्ति ने मोल लेकर उसको कुतुबुद्दीन ऐबक के हाथों बेच दिया| कालक्रम में इल्तुतमिश प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ। वह अपनी योग्यता से बदायूं का सूबेदार बन गया। उसकी योग्यता देखकर ऐबक ने अपनी कन्या से उसका विवाह कर दिया। इल्तुतमिश ने खोखरियों को युद्ध में परास्त किया| जिससे उसकी प्रसिद्धि अत्यधिक बढ़ गई| उसे अमीर उल उमरा की उपाधि से विभूषित किया गया|

अत: इल्तुतमिश ने जो सिहासन प्राप्त किया था वह फूलों के शैय्या नहीं बल्कि कांटों का ताज साबित हुआ| उस समय तो दिल्ली शैशवकाल से गुजर रही थी| कुतुबुद्दीन ऐबक केवल 4 वर्षों तक ही स्वतंत्र रूप से शासन कर सका था| उसकी मृत्यु अकस्मात हो गई थी| अतः यह सल्तनत संगठित एवं सुव्यवस्थित नहीं हो सकी थी। उन परिस्थितियों में सौभाग्य से दिल्ली सल्तनत को इल्तुतमिश जैसा योग्य और चलाक शासक मिल गया| इतिहासकार दिल्ली का वास्तविक संस्थापक इल्तुतमिश को ही मानते हैं।

इल्तुतमिश के द्वारा दिल्ली सल्तनत की बागडोर संभालने के बाद उसके सामने निम्लिखित चार समस्याएं थी :-

(1). इल्तुतमिश की पहली समस्या थी कि वह एक गुलाम था| इसलिए कुलीन एवं प्रभावशाली अमीर उसे सुल्तान मानने के लिए तैयार नहीं थे| वह अपनी योग्यता के कारण प्रतिष्ठित अमीरों की आंखों में खटक रहा था| वे अमीर दिल्ली में उसके विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे थे। लेकिन इल्तुतमिश ने बहुत साहस एवं धैर्य के साथ अमीरों का सामना किया। सौभाग्य से उसको सेना का सहयोग तथा समर्थन प्राप्त था| इस तरह उसने अपने विरोधियों का दमन कर दिल्ली में अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली।

(2). प्रतिद्वंदिता की समस्या :- इल्तुतमिश की दूसरी बड़ी समस्या प्रतिद्वंदिता की थी| उसका पहला प्रतिद्वंदी आरामशाह था जो लाहौर से उसको तंग किया करता था। आरामशाह कुतुब दीन ऐबक का वास्तविक उत्तराधिकारी था। लोग इल्लतुतमिश को अनाधिकारी और अपहर्ता समझते थे। इस समस्या को उसने शीघ्र हल कर दिया।

इल्तुतमिश का दूसरा प्रतिद्वंदी यल्दौज था। जो गजनी का शासक था। वह अपने को संपूर्ण भारत का शासक समझ रहा था। वह दिल्ली की सल्तनत को हड़पना चाहता था। इसका भी इल्तुतमिश ने दमन कर दिया।

तीसरा प्रतिद्वंदी कुबाचा था जो सिंध का शासक था| कुबाचा अपने आप को ऐबक का संबंधी बतलाता था दिल्ली पर उसकी भी दृष्टि लगी हुई थी| कुबाचा को दबाकर इल्तुतमिश निष्कंटक हो गया।

@राजपूतों की समस्या - इल्तुतमिश की तीसरी बड़ी समस्या राजपूतों की थी राजपूत लोग अपनी खोई हुई स्वतंत्रता को फिर से प्राप्त करना चाहते थे| जालौन, ग्वालियर, रणथंभौर और अन्य कई राज्यों के राजपूत राजाओं ने अपने को स्वतंत्र घोषित कर लिया था। इल्तुतमिश ने पूरी ताकत लगाकर इन सब विद्रोहियों को नतमस्तक कर दिया।

@ मंगोलों के आक्रमणों की समस्या - मंगोल लोग बड़े खूंखार एवं निर्दयी होते थे। उन दिनों मैं अपने प्रसिद्ध नेता चंगेज खां के नेतृत्व में सारे मध्य एशिया को उजाड़ ते हुए आगे बढ़ रहे थे| यह लोग अलाउद्दीन पर टूट पड़े जो अपने पुत्र जलालुद्दीन के साथ भाग खड़ा हुआ। जलालुद्दीन ने गजनी पर धावा बोल दिया और यल्दौज को मार भगाया। यल्दौज पंजाब भागा और लाहौर में आकर शरण लिया। मंगोलों ने जलालुद्दीन का पीछा किया। जलालुद्दीन गजनी से भी भाग खड़ा हुआ और भारत की ओर चल पड़ा। उसने सिंध नदी के किनारे अपना पड़ाव डाल दिया।उसने अपने एक दुत को इल्तुतमिश के पास शरण की याचना के लिए भेजा। लेकिन इल्तुतमिश चंगेज खां के मना करने पर जलालुद्दीन को शरण नहीं दिया और उससे पंजाब छोड़ देने का निवेदन किया| इल्तुतमिश से निराश होकर जलालुद्दीन भारत से लौट गया| इसके कारण चंगेज खान भी भारत पर बिना आक्रमण किए वापस लौट गया|

इस तरह इल्तुतमिश जलालुद्दीन को शरण ना देकर चंगेज खां के आक्रमण से दिल्ली साम्राज्य को बचाकर दूरदर्शिता का परिचय दिया और बड़े ही धैर्य से इस समस्या का भी समाधान कर लिया या यह कहें कि अप्रत्यक्ष रूप से चंगेज खान के आक्रमण ने इल्लतुतमिश की स्थिति को और भी सुदृढ़ बना दिया| इसके फलस्वरुप यल्दौज और कुबाचा का नामोनिशान मिट गया था| पहला मंगोल द्वारा बंदी बना लिया गया और दूसरे की शक्ति एकदम छीन हो गई, जो इल्तुतमिश के सामने नहीं ठहर सका| और अंत में सिंधु नदी में डूबकर मर गया।

@ इल्लतुतमिश की प्रमुख विजय - अपने विरोधियों को परास्त करने के अलावे इल्लतुतमिश के सैनिक सफलताओं में ग्वालियर, बंगाल और मालवा पर उसके अधिकार गिने जा सकते हैं। इस तरह इल्तुतमिश ने विन्धय पर्वत के उत्तर में समस्त भारत पर अपना पूर्ण प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

@ मनाभिषेक की प्राप्ति - इल्तुतमिश की जीवन की सबसे गौरवपूर्ण घटना बगदाद के खलीफा से सम्मान पदक प्राप्त करना था। इस प्रकार दिल्ली की गद्दी पर उसका अधिकार पूर्ण रुप से सुरक्षित हो गया।

@ देहान्त - बुमियान विजय के क्रम में इल्तुतमिश बीमार पड़ा। दिल्ली लौटने के कुछ महीने बाद अप्रैल 1236 ई. में उसकी मृत्यु हो गई| मृत्यु के समय उसके साम्राज्य की सीमा उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तक एवं पूर्व में बंगाल से लेकर पश्चिम में सिंध नदी तक फैला था।

.......निष्कर्ष -

*****************धन्यवाद******************